WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Central Staff College

*362. **Shri Harish Chandra Mathur:**
Dr. Ram Subhag Singh:

Will the Minister of **Commerce and Industry** be pleased to state:

(a) whether it is proposed to have a Central Staff College for Industrial Extension Service;

(b) what is the nature of the scheme; and

(c) when is the college likely to start functioning?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a). Yes, Sir.

(b) and (c). The details of the scheme are being finalised.

Final Settlement of Claims

*363. **Shri Keshava:** Will the Minister of **Rehabilitation and Minority Affairs** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 738 on the 9th March, 1960 and state whether the final settlement of claims in respect of refugees from West Pakistan has been accomplished?

The Minister of Rehabilitation and Minority Affairs (Shri Mehr Chand Khanna): No. Sir. As a result of physical verification made in April, 1960, it was found that actually 42,000 cases were pending in March and not 34,000. Out of these 12,000 cases have since been settled and 30,000 cases still remain to be settled. In addition there are about 4600 Rehabilitation grant applications pending settlement.

एमरी चक्की का पत्थर

*३६४ **श्री प० ल० बारूपाल :**
श्री मेश चन्द्र व्यास :
श्री दीनबन्धु परमार :

क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या एमरी पत्थर की चक्कियों के निर्माण में प्रयोग किया जाने वाला पत्थर वस्तुतः एमरी पत्थर है ;

(ख) क्या यह सच है कि इन चक्कियों के लिये पत्थर किसी मिश्र रसायन की सहायता से पत्थर के टुकड़ों को जोड़ कर बनाया जाता है ; और

(ग) सरकार द्वारा प्रति वर्ष एमरी पत्थर निर्माता कम्पनी को अब तक कितनी राशि दी जा चुकी है और यह राशि किस रूप में दी गई थी ?

उद्योग मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : (क) जी, नहीं ।

(ख) जी, हां ।

(ग) अपेक्षित जानकारी वाला एक विवरण सभा की मेज पर रखा जाता है ।

विवरण

संस्थाओं के हाथ एमरी पत्थर की चक्कियां बेचने के लिए एमरी पत्थर निर्माता कम्पनी को सरकारी सहायता के रूप में निम्न राशियां दी गयी हैं :—

वर्ष	राशि
	रुपये
१९५५–५६	९,०१०
१९५६–५७	६३,०१०
१९५७–५८	३९,०६०
१९५८–५९	१९,५७०
१९५९–६०	१०,२७०

२२–११–५८ से सहायता देना बिल्कुल बन्द कर दिया गया है । और अब इस के लिये कुछ भी धन-राशि मंजूर नहीं की जा रही है ।